

तमलिनाडु में ओधुवर

प्रलिम्स के लयि:

ओधुवर, शैव, पथगिम, त्रिमुर्ई, थेवरम, अववैयार, भक्तपरंपरा

मेन्स के लयि:

ओधुवरों को मान्यता दयि जाने से सदयिों पुरानी परंपरा को वैधता और समुदाय को लाभ

[स्रोत: द हट्टि](#)

चर्चा में क्यो?

हाल ही में तमलिनाडु सरकार ने 15 ओधुवरों (जसिमें पाँच महलिाएँ शामिल हैं) की नयिक्तके आदेश दयि हैं, इन्हें वशिष रूप सेवेनई के शैव मंदरिों में भजन और सतुता गायकर देवी-देवताओं की पूजा-वंदना करने के लयि नयिक्त कयि गया है।

तमलिनाडु में ओधुवर:

परचिय:

- ओधुवर तमलिनाडु के हट्टि मंदरिों में भजन गायन करते हैंलेकनि वे पुजारी नहीं होते हैं। उनका मुख्य कार्य शैव मंदरिों में भगवान शवि की सतुता करना है, ये गीत-भजन थरिमुर्ई भजन संग्रह से लयि जाते हैं। वे भक्तभजन गाते हैं, उन्हें पवतिर गर्भगृह में प्रवेश की अनुमत नहीं होती है।

ओधुवर परंपरा की शुरुआत:

- प्राचीन काल से ही ओधुवरों की परंपरा रही है, भक्तआंदोलन की शुरुआत के साथ ही इनकी मान्यता का पता चलता है। तमलिनाडु में 6ठी और 9वीं शताब्दी के बीच ओधुवर परंपरा अचछी तरह विकसति हुई।
- इस अवधि के दौरान अलवार और नयनार के नाम से प्रचलतिअनेकों संत-कवयिों ने क्रमशः भगवान वशिषु एवं भगवान शवि की सतुतामें भजनों के रूप में भक्ति काव्य की रचना की। ओधुवर इस समृद्ध संगीत व भक्तिविरसित के संरक्षक के रूप में उभरे।

अलवार और नयनार: तमलि भक्तिपरंपरा के संत:

अलवार:

- भगवान वशिषु की भक्ति: अलवार बारह वैष्णव (भगवान वशिषु के भक्त) संत-कवयिों का एक समूह था। उनकी रचनाएँ मुख्य रूप से भगवान वशिषु के प्रतुउनकी गहरी श्रद्धा-भक्ति पर केंद्रति थीं और इन रचनाओं में मोक्ष प्राप्त करने हेतुईश्वर के प्रतुसमर्पण (प्रपत्ति) की अवधारणा पर बल दयिा गया था।
- काव्य रचनाएँ: अलवार के भक्तिभजन और कवतिाएँ प्रमुख वैष्णव ग्रंथ, नालयरि दविय प्रबंधम में संकलति हैं। तमलि भाषा में रचति इन रचनाओं में भगवान वशिषु के दविय गुणों एवं रूपों का वर्णन है।

नयनार:

- भगवान शवि की भक्ति: नयनार 63 शैव (भगवान शवि के भक्त) संत-कवयिों का एक समूह था। ये भगवान शवि के प्रतुपूरणतः समर्पति थे और उनकी सतुतामें भजन व काव्य की रचना करते थे, ये रचनाएँ भक्तिभारग तथा परमात्मा के प्रतुप्रेम पर केंद्रति थीं।
- काव्य रचनाएँ: नयनारों के भजन और काव्य रचनाएँ शैव धर्मग्रंथों के संग्रह थरिमुर्ई में संकलति की गईं। तमलि भाषा में लखिति इन रचनाओं में भगवान शवि की वभिनिन रूपों तथा दविय गुणों का वर्णन है।

?????:

प्रश्न. भक्तिसाहित्य की प्रकृतिका मूल्यांकन करते हुए भारतीय संस्कृतिमें इसके योगदान का नरिधारण कीजयि । (2021)

प्रश्न. शरी चैतन्य महाप्रभु के आगमन से भक्तिआंदोलन को एक असाधारण नई दशिा मली थी । चर्चा कीजयि । (2018)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/odhuvars-in-tamil-nadu>

